Total No. of Questions – 5] [Total Pages : 3

(2022)

9360

M.A. Examination

SANSKRIT

(सांख्य तथा वेदान्त)

Paper–IV

(Semester–I)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80, Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : 1. प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर एक ही स्थान पर हल करें।

2. नियमित विद्यार्थियों को प्रत्येक प्रश्न के अङ्क कोष्ठक के बाहर दिए गए हैं। प्राईवेट विद्यार्थियों के अंक कोष्ठक के अन्दर दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित में से **तीन** कारिकाओं की प्रसंग-सहित व्याख्या करें।

(क) मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।।

(ख) द्रेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्।।

(ग) पुरुषस्य दशर्नार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।
षङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोंगस्तत्कृतः सर्गः।।

(घ) एते प्रदीपकल्पाः परस्परविलक्षणा गुणविशेषाः।
कृतस्नं पुरुषस्यार्थ प्रकाश्य बुद्धौं प्रयच्छन्ति।।

(ङ) एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाशक्तितुष्टिसिद्धयाख्यः।
गुणवैषम्यविर्मदात तस्य च भेदास्तु पञ्चाशत्।।

(च) नानाविधैरुपायैरुपेकाठिलनुपकारिण्यनुपकारिणः पुंसः।
गुण वत्यगुणस्य सतस्तस्यार्थमपार्थकप्रचरति।। 27(30)

2. सांख्यकारिका में वर्णित सत्कार्यवाद का विस्तारपूर्वक विवेचन करें।

अथवा

सांख्य कारिका के अनुसार आत्मा की सिद्धि कैसे होती है? विस्तार से वर्णन करें। 8(10)

3. अधोलिखित में से किन्हीं **तीन** सन्दर्भों की सप्रसंग व्याख्या करें।

(क) काम्यानि-स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि।
निषिद्धानि नरकाधनिष्टसाधनानि ब्राह्मणदननादीति।

(ख) इदमज्ञानं समष्टिव्यष्ट् यभिप्रायेणैकमने कमिति च व्यवह्रियते।

(ग) विक्षेपशक्तिस्तु यथा रज्जवज्ञानं स्वावृतरज्जौ स्वशक्त्या सर्पादिकमुद भावयति।

(घ) सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि।

(ङ) एतत् प्राणदिपञ्चकमाकाशादिगतरजोंऽशोभ्यो मिलितेभ्य उत्पद्यते।

(च) पञ्चीकरणं त्वाकाशादिपञ्च-स्वकैकं द्विधा समं विभज्य तेषु दशसु भागेषु प्राथमिकान् पञ्चभागान् प्रत्येकं चतुर्धासमं विभज्य तेषां चतुर्धा भागानां स्वस्वद्वितीयार्धभागपरित्यागेन भागान्तरेषु संयोजनम्। 27(30)

4. वेदान्तसार में प्रतिपादित अनुबन्ध-चतुष्ट्यम् की सविस्तार व्याख्या करें।

अथवा

वेदान्तसार में वर्णित समाधि का विस्तारपूर्वक विवेचन करें। 8(10)

5. ईश्वरकृष्ण के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डालें।

अथवा

दर्शन साहित्य में सदानन्द विरचित वेदान्त सार का महत्व बताएं। 10(20)